एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

दुधारू पशु की देखभाल एवं प्रबंधन

(*डॉ. सचिन कलास्वा[1] एवं डॉ. रविंद्र जादव[2])
[1]सहायक प्रोफेसर, पशुपालन पॉलीटेक्नीक, जी.वी.एम. संस्थान, शहेरा, पंचमहाल, गुजरात
[2]सहायक प्रोफेसर, एम. बि. वेटेरीनरी कॉलेज, डूंगरपुर, राजस्थान
*संवादी लेखक का ईमेल पता: s.m.kalaswa23@gmail.com

पशुपालन उतना ही पुराना है जितना मानव सभ्यता भारत के पास है. जानवरों के साथ घनिष्ठता रखने या उन्हें अपने परिवार में से एक मानने की परंपरा हमारे देश मे है। दुधारू पशु की देखभाल एवं प्रबंधन की शुरुआत स्वस्थ बछड़े के जन्म से होती है। जन्म लेने वाली स्वस्थ मादा बछडी का तेजी से बढ़ने और कम उम्र में ही उत्पादक गाय या भैंस बनने के लिए अच्छी तरह से देखभाल करनी जरूरी है। दुग्ध उत्पादन की पूरी अवधि के दौरान डेयरी गायों का आहार प्रबंधन महत्वपूर्ण है ताकि उनका पालन-पोषण डेयरी किसान के लिए लाभदायक हो। डेयरी पशु के अधिकतम दूध उत्पादन के लिये उचित प्रबंधन विशेष महत्व है।

निम्नलिखित प्रबंधन सिद्धांतों का पालन किया जाना चाहिए।

१. ब्याने के तुरंत बाद पहले कुछ दिनों तक पशु को रेचक आहार और गर्म दलिया खिलाना चाहिए। इस समय पशु का प्रबंधन अलग से किया जाना चाहिए ताकि विशेष ध्यान रखा जा सके.
२. बार-बार थन खाली करने से दूध का बुखार हो सकता है विशेष रूप से अधिक दूध देने वाले पशुओं और पिछली शुष्क अवधि के दौरान खराब प्रबंधन वाले पशुओं में।
३. पशु के उपभोग की सीमा तक फलीदार घास या पुआल के साथ हरा रसीला चारा प्रदान करें, ताकि उसके रखरखाव की सभी आवश्यकताएं केवल चारे के माध्यम से पूरी हो सकें। प्रत्येक 2 से 2.5 लीटर दूध के लिए 1 किलोग्राम की दर से अतिरिक्त सांद्रण प्रदान किया जाना चाहिए। साथ में नमक और खनिज की खुराक दी जानी चाहिए।
४. जानवरों को कभी भी डराएं या उत्तेजित न करें। उनके साथ हमेशा नरमी और दयालुता से पेश आएं।
५. उचित आहार और देखभाल के साथ, गाय में ब्याने २ य ३ माह बाद गर्मी के लक्षण दिखाई देते है. गर्मी के लक्षण दिखाई देने पर अनावश्यक रूप से सेवा न रोकें। ब्याने के बीच का अंतराल जितना कम होगा, पशु दूध उत्पादक के रूप में उतना ही अधिक कुशल होगा।
६. पशुओं के प्रजनन और ब्याने का उचित रिकॉर्ड बनाए रखने से वर्ष भर दूध का प्रवाह सुनिश्चित होगा। प्रत्येक जानवर को उसके उत्पादन के अनुसार भोजन देने पर व्यक्तिगत ध्यान देना आवश्यक है। इस प्रयोजन के लिए व्यक्तिगत उत्पादन रिकॉर्ड बनाए रखें।
७. पीने के लिए इच्छानुसार या थोड़े-थोड़े अंतराल पर पानी उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
८. दूध दुहने में नियमितता आवश्यक है। अधिक दुध देने वाले पशु में दो बार की तुलना में तीन बार दूध निकालना बेहतर है क्योंकि 10-15% अधिक दूध का उत्पादन किया जा सकता है।
९. थनों को अनावश्यक रूप से झटका दिए बिना तेजी से, निरंतर, सूखे हाथ से दूध दुहना चाहिए। दूध दुहना पूरे हाथ से करना चाहिए, लेकिन अंगूठे और तर्जनी से नहीं।

१०. दिन के गर्म समय में आश्रय के साथ ढीला आवास उपलब्ध कराया जाना चाहिए। ढीली आवास व्यवस्था में पशुओं को अधिकतम व्यायाम मिलेगा।
११. रोजाना ब्रश करने से ढीले बाल और कोट से गंदगी निकल जाएगी। संवारने से जानवर की खाल भी लचीली रहेगी।
१२. भैंसों को नहलाने से या उनके शरीर पर पानी छिड़कने से विशेषकर गर्मियों में भैंसों को आराम मिलेगा।
१३. सामान्य बीमारियों का ठीक से पता लगाकर इलाज किया जाना चाहिए। नियमित रूप से मास्टिटिस की जाँच करें।
१४. ब्याने के बीच कम से कम 60-90 दिन की शुष्क अवधि प्रदान करें। यदि शुष्क अवधि पर्याप्त नहीं है, तो बाद में दूध की पैदावार कम हो जाएगी।
१५. गायों को महत्वपूर्ण बीमारियों से बचाव का टीका लगवाएं और कीड़ों-मकोड़ों से भी बचाव करें।